कपटमुनि का कुनबा

[कैंप]

एक : वाह भाई वाह पुश्तों से चले आ रहे थे गाम में। और एक दिन में उजाड़ दिए। सोते–सोते को रात को भागना पड़ा। बस यही आवाज आ रही थी कि मार लो–मारलो, लगा दो आग इनमें। हमारे घरों में आग दे दी, जला के खाक कर दिए....''

दो : ''इसकी बीबी के पेट में बच्चा था। लात मार के खतम कर दिया। किसी की दाढ़ी खींच ली, किसी के तबल मार दिया, नब्बे साल के बुड्ढ़े को मार दिया। अरे, वो तो चार दिन में वैसे ही मर जाता। क्या था कि बच्चों को मार दिया, औरतों को घसीट के ले गए ...''

तीन : ''क्या ये हमारा मुल्क नहीं है? हम कब से पाकिस्तान के हो गए? भाई, हम ना तो मुसलमान हैं, न हिंदू हैं, हम तो गरीब हैं। कहते हो क्या है तुम्हारा यहां। हमारा क्या है भाई, जब तुम्हीं हमारे न हुए। पचास– पचास के घर थे और क्या था? जो तुमने जला दिए....''

चार : ''रोज सुबह उठते थे... दिन भर नमस्ते चौधरी जी, ठीक है चौधरी जी, बस यही दुआ सलाम थी हमारी, जो तुमने खत्म कर ली, लुहार तुम्हारा काम करते थे, पुम्बे तुम्हारी रजाई भरते थे, धोबी तुम्हारे कपड़े धोते थे... आप ही लोगों की मजदूरी की और आपने ही मारा।

पांच : अरे, तुम्हें वोट ही तो चाहिए थे, ऐसे ही कह देते, हम तो सारे के सारे गेर देते, हमें क्या करना.... हमारे घर क्यों उजाड़ दिए, बच्चे क्यों छीन लिए, हमारी जिन्दगी क्यों तबाह की... गरीबों की बात करते हो... झूठ बोलते हो तुम....

सामूहिक नृत्य

अंबानी हैं अदाणी हैं
टाटा हैं सोमाणी हैं
सबने मिल कर ठाना है
नमो–नमो को लाना है
नमो–नमो जब आएंगे
अपने दिन फिर जाएंगे
अच्छे दिन जब आएंगे
बिजनिस को चमकाएंगे
दूध मलाई खाएंगे

नमो-नमो जब आएंगे
कपटमुनि संग आएंगे
खूब मसान जगाएंगे
अच्छे दिन आ जाएंगे

दृश्य-एक

[साम्प्रदायिक हिंसा में उजड़े मैले-कुचेले मामूली लोगों के शिविर का दृश्य। एक खामोश दृश्य जो सिर्फ तीन-चार संवादों को लिए होगा।]

वाचन-ए
ये नफरत का अनुष्ठान है
ये सत्ता का महायज्ञ है
कैसे गाढे धुएं उठे हैं
जहर लिए आते हैं देखो
घर जलते हैं बस्ती जलती
चर्बी जलती
निर्बल.... निर्धन.... बच्चे .... औरत
मानुष हत्या का हविष्य डलता जाता है

वाचन-बी
देखो कैसी जगर-मगर है
विजयोत्सव है
ये सत्ता का महायज्ञ है
शंख बजे हैं दसों दिशाएं हिली हुई हैं
सौ-सौ पवनें चली हुई हैं
घर्घर रथ आते हैं उमड़े
लिए पताका प्रतिशोधों की
घर-घर हिटलर
घर-घर फ़युहरर

वाचन-सी
देखो कैसी जगर-मगर है
विजयोत्सव है... अच्छे दिन हैं
मुटमर्दों का.... धन-पशुओं का नर्तन देखो
पूंजी का दशमुख हंसता है
पीले-पीले दांत दिखाता
मानो अपना मरण छुपाता

अच्छे दिन आ गए... अच्छे दिन आ गए...

बच्चे चलो स्कूल चलते हैं... संस्कार सीखते हैं... चरित्र निर्माण करते हैं....

बाबा बत्तरा का गुरुकल

वाचक : ये महान चिन्तक और विश्वविज़्यात शिक्षाविद् और इतिहासकार माननीय बत्तरा जी का गुरुकुल है। देखिए कैसा तपोवन जैसा रमणीय वातावरण है। बच्चे यहां अपना चरित्र निर्माण कर रहे हैं।

सब बच्चे (हेल हिटलर के अन्दाज़ में)

नमस्ते! नमस्ते! नमो मातृभूमे!

गुरु जी : शाबाश! शाबाश! बैठो बच्चो। बच्चो आज दांत मांजे थे?

सभी : हां ... गुरु जी

गुरु जी : ईश वन्दना की थी।

सभी : हां गुरु जी।

स्नान के बाद : सूर्य नमस्कार किया था... ? प्राणायाम ?

हां गुरु जी

गायत्री मंत्र पढ़ा था...।

हां गुरु जी।

एक बच्चे से : सुनाओ, गायत्री मंत्र....

ओ३म भूः भुवः स्वः

ओ३म ऐसे नहीं बोलते नाभि से नाद उठाओ। बोलो राष्ट्र....

एक बच्चा : राष्टर....

बोलो राष्ट्र...

बच्चा : राष्ट्र...

गुरुजी : ऐसे नहीं, मुंह गोल करके जिव्हा के नीचे हवा भर के बोलो राष्ट्र...

अच्छा बताओ हमारा राष्ट्र कितना बड़ा है।

इसमें पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, बर्मा, चीन, जापान, सिंगापुर सब भारत मंडल के भाग हैं।

और कोई नाम है?

- इसका प्राचीन नाम आर्यावर्त है।

और कोई नाम....

- हिन्दुस्तान
- क्या कहा, इधर आओ (कान खींचता है) कल क्या बताया था...

भूल गए....!

- हिंदुस्तान
- धौल जमाता है हिन्दुस्तान नहीं 'हिन्दुस्थान'

बोलो...

- हिन्दूस्थान.... शाबाश...

  चलो... चलो... अब अज़्यास करो। हां, अन्दर आना हो तो 'मे आई कम इन सर' नहीं कहना। क्या कहना है...

सभी : किम् अपि आयामि

शाबाश! अब पाठ याद करो।

आवाजें :

- वैदिक ज्ञान संसार के ज्ञान का आदि स्रोत है।
- संसार की सभी ज़ाषाएं संस्कृत से निकली हैं।
- वैदिक संस्कृति संसार की सबसे प्राचीन संस्कृति है।
- वैदिक गणित संसार का सबसे महान गणित है, उसी से सारा गणित निकला है।
- परमाणु प्रक्षेपास्त्रों का सर्वप्रथम आविष्कार महर्षि कणाद ने किया
- प्लास्टिक सर्जरी का प्रारज़्भ पुराणकाल में भगवान गणेश की प्लास्टिक सर्जरी से हुआ
- हमारा अथर्ववेद अर्थशास्त्र का प्राचीनतम ग्रंथ है।

नाम बताओ...

- विश्व के पहले अभियन्ता महर्षि विश्वकर्मा थे।
- विश्व के पहले चिकित्सा शास्त्री चरक ऋषि थे।
- विश्व के पहले शल्य चिकित्सक सुश्रत ऋषि थे।

वास्तविक नाम बताओ

- ज्यां पाल सार्त्र का वास्तविक नाम ज्ञान पाल शास्त्री था। उन्होंने त्रेतीरय उपनिषद के आधार पर अस्तित्ववाद का सिद्धांत निकाला।
- सेमुअल बैकेट का वास्तविक नाम श्यामलाल बैकुंठ था। उन्होंने भरतमुनि के निर्देशों के अनुसार नाट्य लेखन किया।
- मैक्समूलर का वास्तविक नाम मोक्षमूलधर था। ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी सम्राट चन्द्रगुप्त द्वारा प्रतिष्ठित वृषभ स्कंध विश्वविद्यालय का ही नाम अंग्रेजों द्वारा बदल कर बनाई गई।
- विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. पी.एन. ओक के अनुसार ताजमहल का वास्तविक नाम तेजोमहालय है ... तथा यह एक प्राचीन शिव मंदिर था ...
- जामा मस्जिद वास्तव में यमुना के तट पर अवस्थित यमुना मंदिर था जो कालान्तर में जमुना मंदिर कहा जाने लगा। आक्रांता मुगलों ने इसी को तोड़ कर जामा मस्जिद का निर्माण किया।

क्या आप जानते हैं ?

क्या आप जानते हैं (प्रातः स्मरणीय) मोहन लाल गांधी का वध किसने किया?

मोहन लाल गांधी का वध महान देशभक्त माननीय श्री नाथूराम जी गोडसे द्वारा किया गया जिनके मन्दिर के निर्माण और मूर्ति की प्रतिष्ठा के लिए देशव्यापी स्तर पर भूमि पूजन के आयोजन चल रहे हैं।

गुरु जी : चलो बच्चो घर जाओ... आज का हो गया...

सभी : प्रणाम गुरु जी...

गुरु जी: और हां याद है न किसी का जन्मदिन कैसे मनाना है... कैसे नहीं मनाना।

बच्चे : मोमबत्ती नहीं जलाना, केक नहीं काटना, दिया जलाना है, गाय को खिलाना है।

दृश्य-तीन

वाचक : चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा ही पर्याप्त नहीं... सबसे महती भूमिका परिवार नामक संस्था की है। ये एक पवित्र संस्था है जो व्यक्ति में अनुशासन, सदाचार और अच्छे संस्कार भरती है... एक अच्छे परिवार की झलक आपको दिखाते हैं।

[पितृसत्तात्मक परिवार टिपिकल रूप में... पिता, पुत्र, पुत्री, बेटा, बहू, सास इत्यादि]

[पिता का खंखारते हुए घर में प्रवेश... बेटे-बेटी डर कर इधर-उधर हो जाते हैं, बहू घूंघट खींच कर अलग जा खड़ी होती है, सास बड़बड़ाती है...]

सास : इनको कुछ समझाओ... वो टेलीविजन देखे जा रहा है... वो बाहर पार्टी में जाने को तैयार बैठी है... छोटी जीन्स खरीदने के लिए पैसे मांग रही है... और ये देवी जी अभी उतर के आई है...

पिता (पुत्र से): ये क्या शोर मचा रखा है... बन्द कर ये टेलीविजन। देखना ही है तो कुछ आस्था, संस्कार जैसे चैनल देखा कर। (और पुत्रियों से) और तुम इधर आओ... तुझें बहुत हवा लग गई है। तुझारी पढ़ाई छुड़वाऊंगा, ढूंढो इनके लिए लड़के। कुछ ऊंच-नीच हो गया तो किसे मुंह दिखाएंगे। आफत की पुड़िया... कल क्या बातें सिखाई थी.... सब भूल गई। बताओ कल क्या बताया था... बोलो।

छोटी : एक सांस में। सदा बड़ों का कहना मानना चाहिए और उनकी सेवा करनी चाहिए। गृह कार्य में दक्ष होना चाहिए... शरीर ढक कर रखना चाहिए... जोर से हंसना नहीं चाहिए और पलट कर जवाब नहीं देना चाहिए... नजरें नीची रखनी चाहिएं...

पिता : और क्या बताया था?

बड़ी : लज्जा नारी का आभूषण है... नारी को सदा पिता,पति और पुत्र के संरक्षण में रहना चाहिए। प्रतिदिन गीता का पाठ करना चाहिए...

पिता : पढ़ी गीता... हमारा राष्ट्रीय ग्रंथ है। याद रखना... मैं बहुत बुरा हूं... बार-बार ये बातें नहीं बताऊंगा।

रघुवीर सहाय की कविता

पढ़िए गीता बनिए सीता
फिर इन सब में लगा पलीता
किसी मूर्ख की हो परिणीता
निज घर बार बसाइए।
होंठ कटीली,
आंखें गीली
लकड़ी सीली
तबीयत ढीली
घर की सबसे बड़ी पतीली
मरकर मात पसाइए

[सास-बहू का मूक विनिमय....]

बहू से: अब छोड़ दे दिखाने को... मजाल है जो कोई काम ढंग से कर दे...

पिता-पुत्र के खाने का दृश्य

पिता : (कटोरी खिसकाते हुए)... आज फिर नमक ज्यादा कर दिया...

वाचक : (चलते हुए)

अच्छी शिक्षा और अच्छा परिवार ही नहीं सब कुछ अच्छा होना चाहिए... आचार-विचार-व्यवहार... सामाजिकता... व्यवसाय...

वाचक : अब ये देखिए ये है एक अच्छी दुकान। देखते हैं इसमें क्या है....

एक या दो दुकानदार :

- ये क्या है ?
- ये शीतल पेय है... कोल्ड ड्रिंक... इसे शुद्ध अज़िमंत्रित गौ अर्क से अर्थात् गौ मूत्र से तैयार किया जाता है, लखनपुर की प्रयोगशाला ने इसे संसार के दिव्यतम पेय के रूप में प्रमाणित किया है... पियेंगे तो कोका कोला भूल जाएंगे। वात, पित्त, कफ, अतिसार, संग्रहणी, कर्क रोग, अबुर्द सभी के लिए यह रामबाण औषधि है।
- ये बिस्कुट हैं.... इन्हें पंचगव्य, गंगाजल और तुलसीदल से तैयार किया गया है।

- ये टूथपेस्ट है... ये शैज़ू है... ये सॉस है, ये फेस पैक है, इनमें गो मूत्र, गोबर और गंगाजल को अलग-अलग अनुपात में कपूर, चंदन आदि के साथ मिश्रित किया गया है। ये शेविंग लोशन तेल के मूत्र से तैयार किया गया है।
- ये टाइल्स भी अभिमंत्रित गोबर से बने हैं। अग्नि और जलरोधक है और इन पर हानिकारक रेडियो तरंगों का कोई प्रभाव नहीं होता।

दृश्य-पांच

कपटमुनि का आश्रम

समीक्षा बैठक

[एक तरफ आश्रम के अधिकारी 'प्रमुख, सह-प्रमुख, उप-प्रमुख आदि' दूसरी तरफ नमो नारायण व मंत्रीगण, तीसरा तरफ लफंग टोलियों के बाबा, महंत वगैरह बैठेंगे] बैठक के लिए आते हुए।

सह प्रमुख : 'स्वच्छ...' कहते ही कैसा लगता है न... (दुहराता है) स्वच्छ... गंदगी अपने आप अलग हो जाती है। पवित्रता का भाव अपने आप आ जाता है।

सह प्रमुख-2 : मुझे तो शक्ति की अनुभूति होती है...

उप-प्रमुख-2 : (हंसता है) ह ह ह ह ऽ... कहते हैं स्वच्छ भारत... लगता है कह रहे हैं ''मगरमच्छ भा ऽ'' (सभी हो-हो कर के हंसते हैं)

सह प्रमुख-1 : 'सुशासन' भी खूब है

सह प्रमुख-2 : हां, मगर कहते हुए दुशासन की गंध नहीं आनी चाहिए... (सभी हंसते हैं)

बैठने के लिए सभी आ गए हैं, बैठक का प्रारम्भ

आश्रम प्रमुख : कहने की आवश्यकता नहीं, हम नियमित समीक्षा के लिए एकत्र हुए हैं। आज पहला विषय विकास और सुशासन है और दूसरा स्वच्छ भारत अभियान की स्थिति। नमो नारायण आप बताइए कि अब तो आप प्रधानमंत्री हैं....

नमो नारायण: (झुक कर) यह आश्रम मेरी मां है। मैं अपने को कभी प्रधानमंत्री नहीं कहता, प्रधान सेवक कहता हूं। मुझे इसलिए भी अच्छा नहीं लगता कि कुछ लोग मुझे प्रधान के बजाय 'परिधान मंत्री कहने लगे... खैर... मैं बता दूं, आपकी सूझबूझ हमारे खूब काम आ रही है। जैसे आपने कहा कि गांधी जन्म तिथि पर स्वच्छता अभियान शुरू करो। हमने सब मंत्रियों, अधिकारियों के हाथ में झाडुएं पकड़ा दीं। जब कोई दिक्कत आती है, कोई आफत आती है हम झाड़एं दिखाकर भगा देते हैं। मैंने तो दज़्तर में ही मोहन लाल गांधी को विराजमान कर दिया है, सबसे पहले उन्हीं पर फूल चढ़ाता हूं तब काम शुरू करता हूं।

गृहमंत्री : आपकी चाणक्य बुद्धि की मैं प्रशंसा करूंगा। अब हम गांधी की पुण्यतिथि मनाएंगे। चूंकि संयोग से यह महान राष्ट्रभक्त नाथूराम गोडसे के महान शौर्य

प्रदर्शन का दिन भी है... इसलिए इस बार इसे पूरे देश और दुनिया में शौर्य दिवस के रूप में मनाया जाएगा। हालांकि जैसा आपका निर्देश है हम इससे अलग रहेंगे... मूर्तियां बन कर आ गई हैं, भूमि पूजन होंगे, अपने इस राष्ट्र नायक के हम भव्य मंदिर बनाएंगे।

पता नहीं आपने ध्यान दिया या नहीं हमने विवादास्पद ढांचे के ध्वंस के लिए संविधान निर्माता अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस को चुना था। अब हमने ईसाइयों के त्यौहार को सुशासन दिवस में बदल दिया। क्यों न हम ईदुलजुहा को 'शाकाहार दिवस' या 'सदाचार दिवस' के रूप में मनाएं। इससे अपूर्व उत्साह का संचार होगा।

(बैठता है।)

[प्रमुख का शिक्षामंत्री को बोलने का इशारा]

शिक्षामंत्री : हम पूजनीय बाबा बत्तरा जी के नेतृत्व में तेजी से आगे बढ़े हैं। शिक्षा संस्थाओं में हम जब चाहें स्वच्छता अभियान शुरू कर देते हैं। गीता की 5151 वीं जयंती हम धूमधाम से मनाएंगे। आईआईटीज टीम में हमने मांसाहारियों, शाकाहारियों के पृथक भोजनलाय बनाने के निर्देश दे दिए हैं। लेकिन मैं बता दूं, हमारे ही कुछ संगठन यह मांग करने लगे हैं कि सवर्णों अवर्णों के अलग-अलग भोजनालय बनें। इसमें आपके निर्देश चाहिए। अर्थात मैं समझती हूं शिक्षा का काम पर्याप्त संतोषजनक गति से आगे बढ़ रहा है।

[प्रमुख का लफंग टोल के मुखिया की ओर इशारा]

लफंग बाबा खड़े होते हैं (तालियां बजती हैं) हम किसी सरडू को छोड़ेंगे नहीं। हमने 150 दिन में इन तमाम हराम... (चारों ओर दुविधा से देखता है) तमाम विद्यर्मियों, विपथगामियों, पंचगामियों को दिन में तारे दिखा दिया है। लव के खिलाफ हमारा जेहाद सफल हुआ है और सफल होगा। हम लड़के-लड़कियों को बिगड़ने नहीं देंगे, लड़कियों के मोबाइल बंद कराएंगे, खुले मुंह घूमना, जीन्स पहनना बंद कराएंगे, एक करोड़ विद्यर्मियों की इस वर्ष के अंत तक घर वापसी कराएंगे।

लफंग-2 : लेकिन समाज का एक प्रश्न है कि घर वापिसी के बाद घर में उन्हें रखेंगे कहां।

लफंग-3 : अरे, क्या बकते हो? ढोर-डंगरों को घर में नहीं रखते... पड़े रहेंगे सुसरे... ढीले तो हो जाएंगे... एक बात और हमें लोग तालिबानी कहें तो कहें। हम कहेंगे तालिबान हैं तो क्या हमारे ही तो हैं।

[वित्तमंत्री कुछ कहना चाहते हैं]

वित्तमंत्री : अच्छा है ये सब चल रहा है, चलता रहे... अच्छा है लोग धर्मान्तरण पर बहस में जुटे रहें तो हमें विकास दर बढ़ाने में कामयाब होने से कोई रोक नहीं

सकता। पर मैं कहूंगा कि विकास न रुके... विकास दर पर आंच न आए। जिन लोगों ने हमें भेजा है... हमारे चुनाव प्रचार का खर्च उठाया है... उन्हें हमसे बहुत उम्मीदें हैं और वे बहुत जल्दी नतीजे चाहते हैं।

हमने महात्मा गांधी रोजगार योजना को निष्प्राण कर दिया है। इससे राजस्व की बचत होगी। धीरे-धीरे सब्सिडी जीरो पर ले आएंगे। टैक्स रिफोर्म करेंगे और डंके की चोट पर करेंगे। कारोबारियों को प्रोत्साहित करना होगा। वे चाहते हैं लेबर लॉज खत्म हों, लेबर रिफोर्म हो, हाइर एण्ड फायर लागू हो, सो हम कर रहे हैं। भूमि अधिग्रहण की अड़चनें अध्यादेश ला कर दूर कर दी है। अब औद्योगिक कोरिडोर के लिए जमीन की कम न होगी। प्राइवेटाइजेशन, डिस-इनवेस्टमेंट सब करेंगे और तेजी से करेंगे। बीमा में विदेशी निवेश और कोयला खानों का आबंटन भी हम अध्यादेश लाकर तेजी से करने जा रहे हैं। यहां यह बताने में कोई हर्ज नहीं कि ये कदम अलोकप्रिय हो सकते हैं और इनके कुछ अप्रिय परिणाम भी होंगे। बेरोजगारी बढ़ेगी, महंगाई भी बढ़ सकती है, विस्थापन भी होगा, किसानों की आत्महत्याएं बढ़ेंगी, छंटनी भी होगी, छोटे-छोटे उद्योग-धंधे और कारोबार बंद होंगे। पर जो कुछ होगा, देशहित में होगा। देश और दुनिया के बड़े उद्योगपतियों से हमारा रिश्ता अटूट हो जाएगा। आप वहां ये करते रहें, हम यहां जो कर रहे हैं, करते रहेंगे।

नमो नारायण: दुनिया आज हमारी ओर देख रही है और हम चिड़िया की आंख की ओर देख रहे हैं। मैंने कानूनों के लिए एक बड़ा सा कूड़ेदान बनाया है। एक वक्त था जब हमें कानूनों की वजह से निर्णय लेने में पग-पग पर अड़चन खड़ी होती थी। श्रम कानून, पर्यावरण कानून, सूचना अधिकार कानून, योजना आयोग, ये आयोग, वो आयोग, कभी यहां संशोधन करो, कभी वहां करो। क्यों न फालतू कानून कूड़ेदान में डालें। कानून होंगे ही नहीं तो टूटेंगे कैसे? (**हंसता है**) (तालियां) फिक्र न कीजिए सब कुछ बदल डालूंगा।

आपका आशीर्वाद रहा तो संविधान की आत्मा को बदल दूंगा। इस देश का अतीत-वर्तमान और भविष्य बदल दूंगा।

प्रमुख : सब कुछ संतोषजनक है और अच्छा चल रहा है। (लफंग टोल को) आप लगे रहिए। (वित्तमंत्री को) आप भी लगे रहिए। मिल के काम होगा।

सह प्रमुख : घर वापसी सारे देश में चलाइए, पूर्वांचल में घुसपैठियों का प्रश्न है, दण्डकारण्य में वनवासियों के बीच काम चलता रहे, दलितों, गिरिजनों का समावेश और प्रयोग ज्यादा तेजी से हो। आतंकवाद को छोड़ना नहीं है। (धीमे से) बड़े काम की चीज है।

उप-प्रमुख : हमे ज्यादा से ज्यादा लठैत चाहिए, भड़ैत चाहिए, फिकैत और बकैत चाहिए। इनका प्रशिक्षण जारी रहना चाहिए।

लफंग टोल : और डकैत...

उप प्रमुख : वे स्वयं प्रशिक्षित हो रहे हैं...

अब आप अपने-अपने काम पर लौटें...

दृश्य-छह (अंतिम दृश्य)

[इसमें एक तरफ लफंग टोल की एक्टिविटीज का सजेशन या शिविर की छाया। दूसरी तरफ प्रोटेस्ट, स्लोगन, डेमोस्ट्रेशन (चढ़ते हुए क्रम में)]

वाचन : हमारी हार का बदला चुकाने आएगा

या कोरस संकल्पधर्मी चेतना का स्वर

हमारे ही दृश्य का गुप्त स्वर्णाक्षर

प्रकट हो कर विकट हो जाएगा।